महाकाव्य

PAPER-II M.A-SEM-II (39)

Paper CC-5

Question — सेतुबन्ध महाकाव्य के प्रथम आश्वास का सारांश लिखें।

Answer — कवि प्रवरसेन द्वारा विरचित सेतुबन्ध एक सफल महाकाव्य है। इसकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। इस महाकाव्य में 1291 गाथाएँ हैं। जिन्हें 15 आश्वासों में विभक्त किया गया है। सेतुबन्ध महाकाव्य का प्रथम आश्वास का मुख्य कथा राम का समुन्दर की ओर प्रस्थान करना है। प्रारम्भ में कवि ने विष्णु को नमस्कार कर उन्हें ग्रहबन्ध में भावी अनुश्रेष्ठता के रूप में चित्रित किया है। तत् पश्चात कवि ने नरसिंह को नमस्कार कर उन्हें भी [illegible] चित्रित किया है। इसके बाद सत्यभामा के लिए स्वर्ग से पारिजात वृक्ष उन्मूलित कर लाने वाले उपेन्द्र की निर्दयता पूर्वक मार डालने वाले भगवान श्री कृष्ण को नमस्कार किया है। कवि ने नमस्कार के रूप में शिव की आराधना का वर्णन करते हुए अर्धनारी ईश्वर का निर्वाह कवि इस काव्य के उद्यमी प्राकृत निर्वाह को दुष्कर बताते हुए अपनी विनम्रता प्रकट की है। ऐसे काव्य के नाम उत्पन्न होता है यश बढ़ता है और सत्य गुणों का अर्जित ज्ञान आता है। ऐसे काव्य में सुन्दर यदि आयोजन के साथ-साथ

अभिमत अर्थों की प्राप्ति सुलभ।
में कठिनता से दिखाई पड़नेवाली
कूट नीति की तरह कूट साहित्य
गया है।

अब कवि काव्य सुनने के
लिए पाठकों को आकृष्ट करता है
जो देवी की कारागृह से मुक्त आलौकिक
के हस्तगमन का उदाहरण तथा अर्थों
सिद्धियों की पूर्ण है। सुरम्य रूपा उत्पन्न
होता है विवाद और झगड़ा की भांति
सुग्रीव और बालि के बीच हुआ है।
बालि के मारे जाने पर सुग्रीव के
द्वारा राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति करता
है। उदार रूपी अर्थों के लिए
प्रार्थक भक्त गजेन्द्र के लिए प्रह्लाद
तथा पिंजरा सिंह के लिए पिंजड़े
के सोपान वर्षाकाल व्यतीत होने
का प्रसंग उपस्थित करता है। कवि
इसके बाद शरद ऋतु के आने का
संकेत करता है। कवि शरद ऋतु
के आगमन की वर्णन करते उत्पन्न करने
वाले विशाल सफल [illegible] सफल
उपमा देता है। दिशाएँ स्वच्छ हो गई
है। शरद कालीन जल भी स्वच्छ दिखाई
पड़ने लगी है। कवि भगवान विष्णु
के जागने की उपमा देता है। [illegible]
चिंतवन की गंध अच्छी लग रही
है। चन्द्र किरणों के पृथ्वी तल
पर पहुँचने के कारण
करीब दिखाई पड़ … चन्द्रमा की

Scanned with CamScanner

चारों तरफ हैं। उपलकी सनातन में ढूंढने के लिए निकल पड़े हैं। इन सारी अद्भुत परिस्थितियों के बावजूद भी राम का दिल न भरा और भी छिन्न होता जा रहा है तथा आंखों में आँसू बह रहे हैं। सीता के खोज पे गए हनुमान अभी नहीं लौटे हैं। फिर कवि अपने काव्य कौशल के द्वारा हनुमान को राम के सामने उपस्थित करता है। सीता की स्थिति बताते हुए सीता के पास होने की बात सुनके उनकी गला भर जाती है। सीता की वृतांत सुनकर राम रो पड़ते हैं। परन्तु सीता जीवित है यह सुनकर हनुमान को गले लगा लेते हैं। इसके उपरान्त हनुमान जी राम के हाथ में सीता के द्वारा प्रदत्त चूड़ामणि दे देते हैं। उसकी स्पर्श पर राम रोमांचित हो जाते हैं। इसके बाद राम अपने आज्ञाकारी लक्ष्मण एवं सैन्यबल के साथ महेन्द्र पर्वत की तरफ समुद्र की ओर चल पड़े।

इसके बाद कवि जानकी सीता का बड़ा ही मार्मिक स्वाभाविक एवं आकर्षक चित्र उपस्थित किया है। राम के सामने अनुसार समुद्र के लिए प्रतिपन्था अन्त में हो गये किष्किंधा पर्वत की जानकी सीता का नाच हारि डाला। राम सागर पर्वत पर पहुँच गये।